5

यूहन्ना की पुस्तक

मसीह, परमेश्वर का पुत्र

शब्दावली व शैली में, यूहन्ना की पुस्तक सुसमाचार के वृज़ांतों में सबसे आसान है। यह इतनी आसान है कि इसका इस्तेमाल नये नियम की यूनानी सीखने वालों को सिखाने के लिए किया जाता है। दूसरी ओर, कई तरह से] विशेषकर इसमें पाए जाने वाले विषयों के हिसाब से यूहन्ना चारों पुस्तकों में सबसे जटिल है।

यूहन्ना का वृज़ांत सबसे अलग है: इसमें सुसमाचार के पहले तीन वृज़ांतों की थोड़ी सी नकल है; इसकी भूमिका सबसे अलग है (1:1-18) और उद्देश्य कथन सबसे अलग हैं (20:30, 31)। यह समझने के लिए कि यूहन्ना की पुस्तक पहली तीन पुस्तकों से अलग ज़्यों है, इसे लिखने के समय की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है।

यूहन्ना की पुस्तक का परिचय

पुस्तक का लेखक

पुस्तक के ''उस चेले ... जिससे यीशु प्रेम रखता था'' द्वारा ''इन बातों को लिखा'' होने का पता चलता है (21:20, 24)।[1] प्रारज़्भिक मसीही इस बात को मानते थे कि यह चेला प्रेरित यूहन्ना ही था।[2] इरेनियुस ने सुसमाचार के पहले तीन वृज़ांतों की बात की और फिर कहा है, ''उसके बाद यूहन्ना, प्रभु के उस चेले ने, जो उसकी छाती पर झुका था, भी एशिया में इफिसुस नामक स्थान में रहते हुए सुसमाचार की एक पुस्तक प्रकाशित की।''[3] इस पुस्तक को इस प्रेरित द्वारा लिखी गई मानने वालों में दूसरी शताज़्दी का, अन्ताकिया का थियुफिलुस; सिकन्द्रिया का ज़्लेमेंट; तरतुलियन (लगभग 155-225 ईस्वी); ओरिगन; और हिपोलिटुस (लगभग 170-235 ईस्वी) थे।

पुस्तक का आन्तरिक प्रमाण इस निष्कर्ष से मेल खाता है[4] कि लेखक कोई यहूदी था, जिसे यहूदी पर्वों, यहूदी रीतियों और सामरियों के साथ यहूदियों के सज़्बन्ध का पूरा ज्ञान था। इसके अलावा वह एक पलिश्तीनी यहूदी था, जिसे सामान्य तौर पर पलिश्तीन की और मुज़्य रूप से यरूशलेम की जानकारी थी। वह उन बहुत सी घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी था, जिनके बारे में उसने लिखा (देखें 1:14; 21:24)। ये तथ्य प्रेरित यूहन्ना की ओर ही इशारा करते हैं।[5]

यूहन्ना के जीवन का संक्षिप्त विवरण सही है: उसका नाम इब्रानी शब्द का संक्षिप्त रूप है, जिसका अर्थ है ''यहोवा अनुग्रहकारी रहा है।'' जबदी और शलोमी उसके माता-पिता थे (मरकुस 1:19, 20; 16:1 [मरकुस 16:1 की मज़ी 27:56 से तुलना करें]) [6] वह और उसका भाई याकूब (मरकुस 1:19, 20), पतरस के साथ भागीदार (लूका 5:10) मछुआरे थे। यूहन्ना स्पष्टतया खाते-पीते घर से था। उनके नौकर-चाकर थे (मरकुस 1:20), और उनके उच्च राजनैतिक सम्बन्ध भी थे। (यूहन्ना को महायाजक जानता था और उसने पतरस को महायाजक के आंगन में लाने का प्रबन्ध कर लिया [यूहन्ना 18:15, 16]।)

हो सकता है कि यूहन्ना 1:35-40 वाला अनाम चेला यूहन्ना, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का अनुयायी हो। जो भी हो, यीशु ने उसे अपने चेलों में से एक बनने के लिए बुलाया (मज़ी 4:18-22)। बाद में उसे बारह प्रेरितों में से एक चुन लिया गया (मज़ी 10:2)। उसे सामान्यतया प्रेरितों में सबसे छोटा माना जाता है।[7]

यूहन्ना को प्रभु के साथ विशेष सम्बन्ध का आनन्द मिला था, क्योंकि वह उसके तीन सबसे नज़दीकी लोगों में से एक था (मरकुस 5:37-40; 9:2; 14:33) और प्रभु भोज के समय उसे सम्मान का स्थान मिला था (यूहन्ना 13:23)। उसने अपने आप को वह चेला बताया, जिससे यीशु प्रेम करता था (13:23; 19:26; 20:2; 21:7, 20)।

स्पष्टतया भावुक यूहन्ना यीशु द्वारा उसे बुलाए जाने के समय क्रोध में था (लूका 9:49-56; मरकुस 3:17)। वह बहुत जज़्बाती था (मरकुस 10:35-37)। मसीह को इस जज़्बात को दबाकर उसका बेहतर इस्तेमाल करना आता था। यीशु ने अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व, अपनी मां की देखभाल की ज़िम्मेदारी यूहन्ना को दी थी (यूहन्ना 19:25-27)। अन्ततः, यूहन्ना प्रेम के प्रेरित के रूप में प्रसिद्ध हो गया। (1 यूहन्ना के संक्षिप्त से पत्र में ''प्रेम'' शब्द लगभग पचास बार मिलता है।)

कलीसिया की स्थापना के बाद, यूहन्ना का प्रेरितों में विशेष स्थान था (प्रेरितों 3:1; 4:19; 8:14; गलातियों 2:9, 10)। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार, उसने अन्तिम सेवकाई इफिसुस में की थी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से हम जानते हैं कि, रोम में सताव शुरू होने पर, यूहन्ना को इफिसुस से एजियन सागर के पास, पतमुस के टापू पर निर्वासित कर दिया गया था (देखें प्रकाशितवाक्य 1:9; 2:1)। प्रारम्भिक मसीही लेखकों के अनुसार, डोमिशियन की मृत्यु के समय, यूहन्ना को इफिसुस में लौटने की अनुमति मिल गई थी, जहां उसने मरने तक काम किया।[8] उसने सम्भवतया सुसमाचार का अपना वृत्तांत तथा तीनों पत्रियां (1, 2 और 3 यूहन्ना) इफिसुस में रहते हुए ही लिखीं।

पुस्तक की तिथि

प्रारम्भिक मसीही लेखकों से संकेत मिलता है कि यूहन्ना की पुस्तक सुसमाचार के तीन अन्य वृत्तांतों के बाद लिखी गई थी। जैसे कि पहले कहा गया है, इरेनियुस ने कहा था कि यूहन्ना ने ''इफिसुस में एशिया में रहते समय'' मत्ती, मरकुस और लूका के बाद लिखा था।[9]

यूहन्ना ने सुसमाचार का बाद में वृत्तांत क्यों लिखा?[10] शायद वह मत्ती, मरकुस और

लूका की पुस्तकों में पहले से उपलब्ध जानकारी के साथ और विश्वसनीय विवरण देना चाहता था।

उसने स्पष्टतया इस भ्रान्तिपूर्ण विचार का, जो पहले वृत्तांतों के लिखे जाने के बाद पनपा था, सामना करने के लिए भी लिखा। यूहन्ना और 1 यूहन्ना की पुस्तकों की तुलना करने पर इसका संकेत मिलता है।[11] झूठे शिक्षक उठ खड़े हुए थे, जो यीशु के मसीह होने का इनकार करते थे (1 यूहन्ना 2:22)। वे सिखाते थे कि मसीह देहधारी होकर नहीं आया (2 यूहन्ना 7; 1 यूहन्ना 4:2 भी देखें), अर्थात यह कि यह जो यीशु है वह-वह मसीह नहीं है, जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी।[12] इस प्रकार यूहन्ना इस बात की दृढ़ता से पुष्टि करते हुए कि "वचन [यीशु[13]] *देहधारी* हुआ; ... और हमारे बीच में डेरा किया" (यूहन्ना 1:14क)। उसका घोषित उद्देश्य इस बात का विश्वास दिलाना था कि "*यीशु* ही *मसीह* है" (20:31)।

ऊपर दी गई बातों को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट होता है कि मत्ती, मरकुस और लूका की पुस्तकें सम्भवतया कई दशक पहले लिखी जा चुकी थीं। बहुत से रूढ़िवादी लेखक यूहन्ना की पुस्तक के लेखन का समय 90 ईस्वी का दशक बताते हैं।[14]

पुस्तक का उद्देश्य

जैसा कि हमने पहले भी ध्यान दिया है, यूहन्ना की पुस्तक का उद्देश्य-कथन सबसे अलग है:

> यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (20:30, 31)।

यूहन्ना के उद्देश्य को तीन मिलते-जुलते भागों में बांटा जा सकता है:

(1) यूहन्ना ने यीशु के परमेश्वर होने को सिद्ध करने के लिए लिखा: "कि यीशु परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" वह हम सब को यह बताना चाहता था कि यीशु परमेश्वर का "इकलौता पुत्र" है (3:16)। यीशु की ईश्वरीयता हर पृष्ठ में दिखाई गई है (देखें 1:1; 8:58; 10:30; 14:9; 20:28)। यह कहा गया है कि "जितनी बार यूहन्ना ने अपनी कलम स्याही में डुबोई, उतनी ही बार उसके मन से यह प्रार्थना निकली कि 'हे प्रभु, जो कुछ मैं लिखता हूं, उससे लोग यीशु में विश्वास लाएं।' "[15]

यूहन्ना द्वारा दिया गया एक प्रमाण यीशु के आश्चर्यकर्म थे। इन आश्चर्यकर्मों के लिए यूहन्ना ने "चिह्न" शब्द का इस्तेमाल किया है (20:30; 2:11; 4:54; 6:2 भी देखें):[16] ये चिह्न परमेश्वर की ओर से थे कि यीशु के दावे सच्चे थे (2:23; 3:2; 4:54; 6:14)। यीशु द्वारा किए गए सभी आश्चर्यकर्मों में से यूहन्ना ने सात को ही चुना (2:1-11; 4:46-54; 5:1-9; 6:14 [आयतें 26 व 30 देखें], 16-21; 9:1-41; 11:1-45)। इनमें से दो

सुसमाचार के सहदर्शी वृज़ांतों में मिलते हैं, जबकि पांच यूहन्ना के वृज़ांत में ही हैं। यूहन्ना के चयन के सज़्बन्ध में, मैरिल टैनी का सुझाव है, ''ये सात आश्चर्यकर्म किसी छोटे से क्षेत्र में हुए, जहां मनुष्य किसी ऐसे नियम या परिस्थिति के बदलने को प्रभावित करने के अयोग्य होता है, जो उसके जीवन को प्रभावित करती है। इन क्षेत्रों में यीशु ने अपने आप को सक्षम सिद्ध किया जहां मनुष्य लाचार है ...।''[17]

(2) यूहन्ना ने यीशु में विश्वास उत्पन्न करने के लिए लिखा: ''कि तुम विश्वास करो।'' ''विश्वास'' शज़्द का इस्तेमाल यूहन्ना की पुस्तक में लगभग एक सौ बार अलग-अलग तरह से हुआ है। यीशु ने अपने सुनने वालों से कहा था, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [अर्थात मसीह] हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (8:24ख)।

''विश्वास'' से यूहन्ना का मतलब, ''मन में मान लेना'' नहीं था। 1:12 में उसने विश्वास करने और ग्रहण करने की अवधारणाओं का इस्तेमाल एक-दूसरे के लिए किया: ''परन्तु जितनों ने उसे *ग्रहण* किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें, जो उसके नाम पर *विश्वास* रखते हैं।'' यीशु में विश्वास रखने का अर्थ बिना संदेह के उसे ग्रहण करना है। 3:36 में, यूहन्ना ने विश्वास करने व आज्ञा मानने की अवधारणाओं का इस्तेमाल एक दूसरे के स्थान पर किया: ''जो पुत्र पर *विश्वास* करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं *मानता,* वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।'' सच्चा विश्वास आज्ञाकारिता से ही दिखाया जा सकता है। 2:24 में ''विश्वास'' के लिए यूनानी शज़्द का अनुवाद ''भरोसा'' शज़्द के रूप में किया गया है। यदि कोई उद्धार पाना चाहता है, तो उसके लिए अपने बजाय यीशु में भरोसा रखना और अपना बलिदान देना सीखना आवश्यक है।

(3) यूहन्ना ने लिखा था कि लोगों को जीवन मिले: ''और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' ''जीवन'' से यूहन्ना का अभिप्राय सांस लेने तथा अन्य शारीरिक प्रक्रियाओं से नहीं था। बल्कि उसने ''उद्धार में विश्वास को दी जाने वाली सब बातों का योग्य'' बता दिया।[18] यूहन्ना 17 में यीशु ने अपनी प्रार्थना में कहा था, ''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें'' (17:3)।

यूहन्ना के वृज़ांत को ''सर्वमान्य सुसमाचार'' कहा गया है। यह तथ्य कि उसने विशेष तौर पर यहूदी रीतियों का वर्णन किया (उदाहरण के लिए, देखें 2:13; 4:9; 19:31), इस बात का संकेत देता है कि उसका लक्ष्य अपने युग के बाद के लोगों तक पहुंचना था। यूहन्ना की पुस्तक के विश्वव्यापी आकर्षण के कारण, इसे एक अलग पुस्तिका के रूप में छपाया जाता है। इस रूप में, यह संसार भर में बांटी जाती है। इसे साहित्य का सबसे अधिक वितरित होने वाला भाग कहा गया है।

पुस्तक की विशेषताएं

सुसमाचार की यूहन्ना की पुस्तक की कई विलक्षण विशेषताएं पहले ही बताई जा

चुकी हैं। और इनमें से बहुत सी विशेषताओं का सम्बन्ध इसके उद्देश्य से है।

यूहन्ना में सात ''चिह्नों'' के अलावा, यीशु के सात ''मैं हूं'' अर्थात परमेश्वर होने के सात दावे भी दिए गए हैं (6:35; 8:12, 58; 10:11; 11:25; 14:6; 15:1)।[19]

सुसमाचार के सहदर्शी वृत्तांतों की तरह यीशु के व्यावहारिक संदेश पर ज़ोर देने के बजाय, यूहन्ना ने उसके स्वभाव तथा उसके उद्देश्य पर गहराई से दिए गए संदेशों पर ध्यान दिया।

यूहन्ना की पुस्तक में ज़ोर यीशु के सार्वजनिक दावों पर नहीं, बल्कि उसकी व्यक्तिगत अर्थात निकुदेमुस (अध्याय 3) और सामरी स्त्री (अध्याय 4) जैसे लोगों के साथ निजी चर्चा पर है। सताइस साक्षात्कार दर्ज किए गए हैं, जिनमें से कुछ विस्तृत हैं और कुछ संक्षिप्त।

यूहन्ना की पुस्तक में अलग-अलग पात्रों के अध्ययन हैं, जिनमें से अधिकतर तो, जैसे निकुदेमुस (3:1-15; 7:50-52; 19:39), फिलिप्पुस (1:43-46; 6:5-7; 14:8-11), थोमा (11:16; 14:5, 6; 20:24-29), और मरियम व मारथा (11:1-40; 12:2-8), गुमनाम लोगों के हैं। अधिकतर मामलों में, इन लोगों के हवाले विश्वास की उन्नति को दिखाते हैं।

सुसमाचार के सभी वृत्तांत मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने तथा पुनरुत्थान पर ज़ोर देते हैं; परन्तु यूहन्ना इस पर दूसरों से कहीं अधिक ज़ोर देता है। इस वृत्तांत का आधा भाग तो यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से जुड़ी घटनाओं को ही बताता है। पुस्तक की हर बात उस निर्णायक समय की ओर ले जाती है, जिसे ''वह घड़ी'' कहा गया है (2:4; 4:21, 23; 5:25, 28; 7:30; 8:20; 12:23, 27; 13:1)।

यूहन्ना की पुस्तक के और भी कई विलक्षण पहलुओं का उल्लेख किया जा सकता है: सुसमाचार का यही वृत्तांत है, जिसमें मन परिवर्तन को नया जन्म कहा है (3:3, 5), जिस विषय को यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में भी जारी रखा (1 यूहन्ना 2:29; 3:9; 4:7; 5:1, 4, 18)। उसने प्रेरितों की अगुआई के लिए पवित्र आत्मा के आने पर ज़ोर दिया (14:16, 17, 26; 15:26; 16:13, 14)।

पुस्तक के विभाजन

यूहन्ना की पुस्तक की एक और विलक्षण बात यीशु की प्रारम्भिक सेवकाई पर ज़ोर देना है। सहदर्शी वृत्तांतों के लेखक तेज़ी से ''महान गलीली सेवकाई'' की ओर बढ़ते हैं, परन्तु यूहन्ना यरूशलेम और यहूदिया में यीशु की प्रारम्भिक सेवकाई के बारे में बताता है। यूहन्ना यीशु की गलील की सेवकाई के दौरान उसके यरूशलेम में जाने के बारे में भी लिखता है। इसी कारण यूहन्ना तीन (और शायद चार) फसह के पर्वों का उल्लेख करता है (2:13; 6:4; 11:55-57; 5:1?)।[20] यूहन्ना की पुस्तक की किसी भी रूपरेखा से यरूशलेम में यीशु के काम के पहले से उसके मन में होने की बात पता चलनी चाहिए।

अध्याय 13 से 17 में यीशु के प्रेरितों की ओर ध्यान दिलाती शिक्षा के एक बड़े भाग के कारण, बहुत से लोग यूहन्ना के वृत्तांत को तीन भागों में बांटते हैं: (1) यीशु की जन

सेवकाई (1:19-12:50); (2) यीशु की निजी सेवकाई (13:1-17:26); (3) यीशु की विश्वव्यापी सेवकाई (उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान) (18:1-21:25)। टैनी ने अपने मुज्य प्वाइंटों के लिए "C" का इस्तेमाल करते हुए, यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का वर्गीकरण किया है।[21] शैकलफोर्ड ने टैनी के मुज्य शज्द लेकर यह रूपरेखा तैयार की है: भूमिका (1:1-18); यीशु के दावों पर विचार करना (1:19-4:54); यहूदियों के साथ विवाद (5:1-6:71); यहूदियों के साथ झगड़ा (7:1-11:53); यीशु के दावों से उलझन (11:54-12:36); चेलों के साथ सभा (12:37-17:26); यीशु के काम का समापन (18:1-20:31); उपसंहार (21:1-25)।[22]

यह ज़ोर देने के लिए कि यूहन्ना की पुस्तक का आधे से अधिक भाग यीशु की मृत्यु पर केन्द्रित है, मैंने अपनी रूपरेखा के दो मुज्य भाग बनाए हैं: (1) यीशु की सामान्य सेवकाई तथा (2) उसकी सेवकाई का अन्तिम सप्ताह, जो उसकी मृत्यु के बारे में ही है। पहले प्रमुख विभाजन में यरूशलेम व यहूदिया में उसके जाने की बात है। दूसरे प्रमुख विभाजन के दो मुज्य भाग: (1) 13 से 17 अध्यायों में अपने चेलों को दिए गए यीशु के अन्तिम वचन और (2) क्रूस की ओर ले जाने वाली दूसरी घटनाएं हैं।

यूहन्ना की पुस्तक की एक रूपरेखा

परिचय (भूमिका) (1:1-18)।

क. यीशु अद्वितीय है (देखें पद 1-5, 14, 16-18)।

ख. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही (देखें पद 6-8, 15)।

I. परमेश्वर के पुत्र की सेवकाई: तैयारी के तीन वर्ष (1:19-11:57)।

क. उसकी सेवकाई का आरज़्भ (1:19-2:12)

1. उसके पहले चेले (1:19-51)

क. गवाही: "देखो, यह परमेश्वर का मेमना है!"-और यीशु के बपतिस्मे का एक हवाला।

ख. चेले: अंद्रियास, पतरस, फिलिप्पुस, नतनएल (और यूहन्ना?)।

2. उसका पहला आश्चर्यकर्म (2:1-11)।

3. कफ़रनहूम में उसका पहली बार जाना (2:12)।

ख. यहूदिया में उसकी प्रारज़्भिक सेवकाई (2:13-3:36)।

1. यरूशलेम को: फसह (उसकी सेवकाई में *पहला फसह*) (2:13)।

2. यरूशलेम में (2:14-3:21)।

क. धन का लेन-देन करने वालों को बाहर निकालना (2:14-17)।

ख. पुनरुत्थान पर शिक्षा (2:18-22)।

ग. आश्चर्यकर्म करना (2:23-25)।

घ. निकुदेमुस को सिखाना (3:1-21)-नये जन्म की चुनौती।

3. यहूदिया में (3:22-36)।

क. यीशु और उसके चेलों की सफलता (3:22; 4:1 भी देखें)।

ख. यूहन्ना के चेलों की ईर्ष्या (3:23-36)।

ग. गलील, यहूदिया, और हर जगह उसकी सेवकाई (4:1-11:54)।

1. गलील के मार्ग में (4:1-45)।

क. सफ़र आरज़्भ हुआ (4:1-3)।

ख. सफ़र में रुकावट: कुएं पर सामरी स्त्री (4:4-42)।

ग. सफ़र पूरा हुआ (4:43-45)।

2. गलील में: एक अधिकारी के पुत्र को चंगा करना (4:46-54)।

3. एक पर्व के लिए यरूशलेम में लौटना (*दूसरा फसह?)* (5:1-47)।

क. यीशु द्वारा एक लंगड़े आदमी को चंगा किया जाना-और शत्रुता (5:1-17)।

ख. यीशु द्वारा परमेश्वर के साथ समानता के दावे-और गवाहियां (5:18-47)।

(1) यूहन्ना की गवाही।

(2) यीशु के आश्चर्यकर्मों की गवाही।

(3) परमेश्वर की गवाही।

(4) पवित्र शास्त्र की गवाही।

4. वापस गलील में (6:1-71):

क. पांच हजार लोगों को खिलाना-और लोगों द्वारा यीशु को राजा बनाने की इच्छा करना (6:1-15)। *(6:4 में वर्णित एक फसह-तीसरा?)*

ख. पानी पर चलना; लोग चकित हो गए (6:16-25)।

ग. जीवन की रोटी पर शिक्षा; लोगों का यीशु को भूलना (6:26-71)।

(1) बहुतों का छोड़ जाना (आयत 66)।

(2) कुछ का ठहरे रहना (आयतें 67, 68)।

(3) एक का विश्वासघात करना (आयतें 64, 70, 71)।

5. मण्डपों (डेरों) के पर्व के लिए यरूशलेम में (7:1-10:21)।

क. पर्व के लिए जाना; उसके भाइयों का अविश्वास (7:1-13)।

ख. जीवन के जल पर शिक्षा समेत पर्व पर शिक्षा; उसके सुनने वालों की अनिश्चितता (7:14-53)।

ग. पर्व में चुनौती–व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ उसके व्यवहार में उसके मन की कोमलता दिखाई देना (8:1–11)।

घ. पर्व पर और शिक्षा–तथा उसके शत्रुओं का विरोध (8:12–59)।

ङ. जन्म के एक अन्धे को चंगा करने समेत पर्व पर एक चंगाई–और उसके शत्रुओं की घबराहट (9:1–41)।

च. अच्छे चरवाहा पर शिक्षा–और उसके श्रोताओं की उलझन (10:1–21)।

6. समर्पण के पर्व के लिए यहूदिया में (10:22–42)।

क. यरूशलेम में शिक्षा–तथा अविश्वास (10:22–39)।

ख. यरदन के पार (पिरिया में) जाना–और विश्वास (10:40–42)।

7. घनिष्ठ मित्रों की सहायता के लिए बैतनिय्याह (यरूशलेम के निकट) में जाना (11:1–46):

क. एक अत्यावश्यक विनती (11:1–17)।

ख. एक विश्वासोत्पादक पुनरुत्थान (11:18–45)।

ग. भविष्यवाणी किया जा सकने वाला प्रत्युज़र (11:46–53)।

8. यहूदिया के उज़री भाग (एप्रैम या इफ्राइम) को निकाले जाना (11:54)।

घ. उसकी सेवकाई के अन्त का निकट आना: *अन्तिम फसह (चौथा ?)* (11:55–57)।

II. परमेश्वर के पुत्र का मिशन: दुख भोगने का एक सप्ताह (12:1–20:29)।

क. यीशु का यरूशलेम को जाना (12:1–50)।

1. बैतनिय्याह में अभिषेक (12:1–11)।
2. यरूशलेम में विजयी प्रवेश (12:12–19)।
3. यरूशलेम में शिक्षा देना (12:20–50)।

ख. अपने चेलों के साथ यीशु (13:1–17:26)।

1. अन्तिम भोज (13:1–38)।

क. पांव धोए।

ख. पकड़वाए जाने की भविष्यवाणी की।

2. महान विदाई सन्देश (14:1–16:33): यीशु की शिक्षाएं ...

क. अपनी मृत्यु पर।

ख. दाख और टहनियों पर ।

ग. पवित्र आत्मा का आना।

3. एकता के लिए प्रार्थना (17:1–26)।

ग. यीशु क्रूस पर (18:1-19:42)।

1. उसकी पेशियां (18:1-19:15)।

क. यहूदा द्वारा पकड़वाया गया (18:1-11)।

ख. हन्ना और कैफा के सामने (18:12-24)।

ग. पतरस द्वारा इनकार (18:25-27)।

घ. पिलातुस के सामने (18:28-40)।

ड. सिपाहियों द्वारा मारा गया (19:1-15)।

2. उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना (19:16-30)।

3. उसका गाड़ा जाना (19:31-42)।

घ. यीशु जी उठा! (20:1-29)।

1. पुनरुत्थान का दर्शन मरियम मगदलीनी को (20:1-18)।

2. उसके चेलों को पुनरुत्थान के दर्शन (20:19-29)।

सारांश (20:30-21:25)।

क. उद्देश्य का एक कथन (20:30, 31)।

ख. पतरस के लिए एक विशेष सबक (गलील सागर में पुनरुत्थान का दर्शन)(21:1-17)।

ग. लेखक पर एक कथन (21:18-24)।

घ. मसीह के जीवन पर एक अन्तिम कथन (21:25)।

टिप्पणियां

[1]20 से 23 पदों में संकेत मिलता है कि उस ''चेले की जिससे यीशु प्रेम रखता था'' लज़्बी उम्र होनी थी। यह इस बात का अप्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्रेरित यूहन्ना ने ही यह पुस्तक लिखी, ज़्योंकि बाइबल से बाहर की परज़्परा के अनुसार, प्रेरितों में से स्वाभाविक मृत्यु केवल यूहन्ना की ही हुई। [2]कुछ लोग यह सिद्ध करने के प्रयास में कि प्रेरित यूहन्ना ने यह वृज़ांत नहीं लिखा, जिसे उसका लिखा माना जाता है, पेपियास के लेख के अस्पष्ट हवाले का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि पेपियास ने दो अलग-अलग यूहन्ना की बात की हो या यदि उसने की भी हो तो उसका यह मानना हो कि प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार के चौथे वृज़ांत का लेखक नहीं है। [3]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 3.1.1. [4]इस पर एक विस्तृत चर्चा (सहयोगी आयतों के साथ) डॉन शैकलफोर्ड, ''जॉन,'' *न्यू टैस्टामेंट सर्वे,* सं. डॉन शैकलफोर्ड (सरसी, आरकैंसा: हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1987), 151-53 में मिलती है। [5]मैरिज़्ल टैनी ने भी ध्यान दिया कि लेखक के सज़्बन्ध में ये व अन्य विवरण दूसरे सज़्भावित लेखकों पर फिट *नहीं* हैं (मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे,* ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1961), 187. [6]कुछ लोगों का विचार है कि शलोमी और यीशु की माता आपस में रिश्तेदार थीं (मरकुस 15:40 के साथ यूहन्ना 19:25 की तुलना करें); यदि वे रिश्तेदार थीं, तो यीशु और यूहन्ना रिश्ते में भाई थे। यह इस बात को समझाने के लिए कि यीशु ने अपनी माता की देखभाल के लिए यूहन्ना को ज़्यों कहा, सहायक होगा। [7]इस निष्कर्ष का एक कारण यह था कि वह

पतरस से आगे निकल सकता था (यूहन्ना 20:4)। एक कारण यह है कि, उपलब्ध अच्छे से अच्छे प्रमाण के अनुसार, वह दूसरे प्रेरितों से अधिक देर तक जीवित रहा। कुछ लोगों ने यीशु के पीछे चलने के लिए कहे जाने के समय उसकी उम्र लगभग पच्चीस वर्ष होने का अनुमान लगाया है। [8]एक प्रारम्भिक (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) लेखक के अनुसार, यूहन्ना शहीद हुआ था; परन्तु अधिकतर प्रारम्भिक लेखकों का सुझाव है कि उसकी मृत्यु बुढ़ापे में इफिसुस में हुई थी। [9]इरेनियुस *अंगेस्ट हेयरसीज़* 3.1.1. [10]अन्ततः, यह समझा जाना चाहिए कि यूहन्ना ने अपना वृत्तांत इसलिए लिखा, क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा थी और उसे ऐसा करने के लिए पवित्र आत्मा की प्रेरणा मिली थी।

[11]यूहन्ना व 1 यूहन्ना की पुस्तक में काफी सम्बन्ध है। उदाहरण के तौर पर, इनके प्रारम्भिक शब्दों की तुलना करें (यूहन्ना 1:1, 2, 14; 1 यूहन्ना 1:1-3)। [12]आज बहुत से गुट मसीह के बारे में झूठे विचारों का दावा करते हैं, सो यूहन्ना का यह ज़ोर देना आज की आवश्कयता है। [13]इस संदर्भ से पता चलता है कि यूहन्ना यीशु की बात कर रहा था। [14]कुछ उदारवादी विद्वान पुस्तक को किसी अज्ञात लेखक (शायद जिसका नाम यूहन्ना था) का नाम देने की कोशिश करते हैं, जिसने दूसरी शताब्दी में लिखा था। परन्तु नये नियम का प्रारम्भिक खण्ड पेपिरस का एक छोटा सा टुकड़ा है, जिसमें यूहन्ना 18:31-33, 37, 38 के वचन हैं। यह उस हस्तलेख का भाग था, जो दूसरी शताब्दी के पहले भाग में मिस्र में वितरित किया गया था। इसकी तिथि लगभग 125 ईस्वी है। यह मूल लेखन को पहली शताब्दी में ले जाता है। [15]लेखक अज्ञात। एरिक डब्ल्यू. हेयडन, *प्रीचिंग थ्रू द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1964), 193 में उद्धृत। [16]बाइबल में, आश्चर्यकर्मों को ''सामर्थ के काम,'' ''अद्भुत काम'' और ''चिह्न'' कहा गया है (मत्ती 11:20; मरकुस 16:20; यूहन्ना 4:48)। ''सामर्थ के काम'' शब्द होने वाली घटना के अलौकिक पहलू को व्यक्त करता है; ''अद्भुत काम'' आश्चर्यकर्म देखने वालों पर उसके प्रभाव के ज़ोर को दिखाता है, जबकि ''चिह्न'' उन आश्चर्यकर्मों के उद्देश्य के महत्व को। ध्यान दें कि यहूदी ''चिह्न'' मांगते थे (देखें मत्ती 12:38; 16:1; 1 कुरिन्थियों 1:22 भी देखें)। [17]टैनी, 190. [18]टैनी, 190-91. [19]''मैं हूं'' कथनों में से प्रत्येक के महत्व पर इस शृंखला में बाद के पाठों में चर्चा की जाएगी। [20]यीशु की सेवकाई के काल के अनुमान इन चार हवालों के आधार पर लगाए जाते हैं। (इस पुस्तक में ''मसीह की निजी सेवकाई कितनी देर तक रही?'' अतिरिक्त लेख देखें।) इन हवालों के महत्व के कारण, उनके अप्रत्यक्ष संकेतों को इस पाठ के दूसरे भाग में रूपरेखा में इटैलिक किया गया है।

[21]टैनी, 192. [22]शैकलफोर्ड, 153-55.